# सामाजिक विज्ञान

## (अर्थशास्त्र)

## अध्याय-2: संसाधन के रूप में लोग

# संसाधन

हमारे पर्यावरण में उपलब्ध हर वह वस्तु संसाधन कहलाती है जिसका इस्तेमाल हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये कर सकते हैं, जिसे बनाने के लिये हमारे पास प्रौद्योगिकी है और जिसका इस्तेमाल सांस्कृतिक रूप से मान्य है। प्रकृति का कोई भी तत्व तभी संसाधन बनता है जब वह मानवीय सेवा करता है।

# संसाधन के रूप में लोग

- संसाधन के रूप में लोग वर्तमान उत्पादन कौशल और क्षमताओं के संदर्भ में किसी देश के कार्यरत लोगों का वर्णन करने का तरीका है।
- उत्पादक पहलू की दृष्टि से जनसंख्या पर विचार करना सकल राष्ट्रीय उत्पाद के सृजन में उनके योगदान की क्षमता पर बल देना है।
- जब इस विद्यमान मानव संसाधन को और अधिक शिक्षा और स्वास्थ्य द्वारा विकसित किया जाता है तब हम इसे मानव पूंजी निर्माण कहते हैं।
- मानव को मानव पूँजी में निवेश बदलता है। एक मानव ही है जो भूमि और भौतिक पूँजी का सही उपयोग करता है। बाद में दोनों अपने आप किसे कार्य को पूरा नहीं कर सकते।

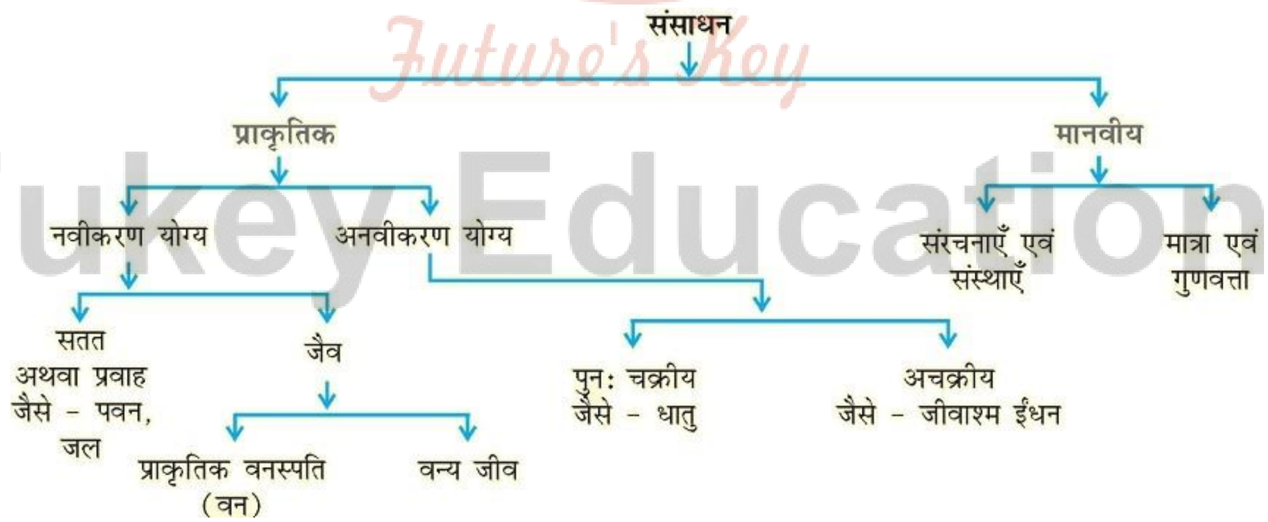


# मानव पूंजी

मानव पूंजी–कौशल और उनमें निहित उत्पादन के ज्ञान का स्टॉक है। अथवा भौतिक पूंजी पर लगने



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

वाले श्रम को मानव पूंजी कहते हैं।

मानव पूँजी से अभिप्राय किसी देश में किसी समय विशेष पर पाये जाने वाले कौशल, क्षमता, सुविज्ञता, शिक्षा ज्ञान के भण्डार से है।

दूसरे शब्दों में, मानव पूँजी ऐसे व्यक्तियों का स्टॉक है जो अपनी शिक्षा, कौशल आदि के साथ देश की उत्पादन प्रक्रिया में उत्पादकीय योगदान करते हैं।

मानवीय पूंजी गठन शब्द का अर्थ, "व्यक्तियों की संख्या को प्राप्त करने और बढ़ाने की प्रक्रिया जिनमें कौशल, शिक्षा और अनुभव होता है जो देश के आर्थिक और राजनीतिक विकास के लिए महत्वपूर्ण होते हैं । इस प्रकार, यह मनुष्य में निवेश और उसके विकास के साथ एक रचनात्मक उत्पादक संसाधन के रूप में जुड़ा होता है ।"

## मानव पूंजी निर्माण

मानवीय पूंजी निर्माण का अर्थ है "ऐसे लोगों की प्राप्ति और उन की संख्या में वृद्धि जिनके पास निपुणताएं, शिक्षा और अनुभव है तथा जो देश के आर्थिक और राजनैतिक विकास के लिये महत्व रखते हैं । अत: एक रचनात्मक उत्पादक साधन के रूप में, यह व्यक्ति और उसके विकास पर निवेश से सम्बन्धित हैं ।"

**मानव पूंजी निर्माण के स्त्रोत:-**

(1) स्वास्थ्य पर व्यय

(2) शिक्षा एवं प्रशिक्षण पर व्यय

(3) कौशल अभिनवीकरण पर व्यय

(4) प्रवासन पर व्यय

## मानव संसाधन

मानव संसाधन (HUMAN RESOURCES) वह अवधारणा है जो जनसंख्या को अर्थव्यवस्था पर दायित्व से अधिक परिसंपत्ति के रूप में देखती है। शिक्षा प्रशिक्षण और चिकित्सा सेवाओं में निवेश



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

के परिणाम स्वरूप जनसंख्या मानव संसाधन के रूप में बदल जाती है। मानव संसाधन उत्पादन में प्रयुक्त हो सकने वाली पूँजी है।

- अन्य संसाधनों से श्रेष्ठ है जैसे भूमि, पूंजी इत्यादि क्योंकि ये संसाधन स्वयं अपना उपयोग नहीं कर सकते। यह उत्पादन का एक सजीव, क्रियाशील तथा संवेदनशील कारक है।
- जापान में मानव संसाधन पर अधिक निवेश किया गया है।

## अर्थव्यवाथा के क्षेत्रक

- अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्रियाकलापों को तीन प्रमुख क्षेत्रकों में बाँटा गया है प्राथमिक, द्वितीय और तृतीयक।
- प्राथमिक क्षेत्रक (सीधे भूमि और जल से जुडी क्रियाएँ)
- कृषि।
- वानिकी।
- पशुपालन।
- मत्स्य पालन।
- मुर्गी पालन।
- खनन्।
- द्वितीयक क्षेत्रक (उत्खनन एवं विनिर्माण क्रियाएँ)
- प्राथमिक क्षेत्रक की वस्तुओं को अन्य रूपों में परिवर्तित करना।
- गन्ने से चीनी।
- कपास से सूत।
- तृतीय क्षेत्र (सेवाएँ)।
- स्वयं उत्पादन नहीं करती।
- उत्पादन प्रक्रिया में सहयोग।
- प्राथमिक और द्वितीय क्षेत्रक का विकास।
- व्यापार।
- बैंकिंग।



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

- बीमा।

## आर्थिक क्रियाएँ

उस क्रिया को आर्थिक क्रिया कहते हैं जिसका सम्बन्ध मानवीय आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने के लिए सीमित साधनों के उपयोग से होता है।

सभी आर्थिक क्रियाएँ आय सृजित नहीं करती अर्थात् यह आवश्यक नहीं कि आर्थिक क्रिया में आय का सृजन हो भी सकता है और नहीं भी। उदाहरण के लिए, उपभोग एक आर्थिक क्रिया है, किन्तु वस्तु के उपभोग द्वारा आय का सृजन नहीं होता।

आर्थिक क्रियाएं वे क्रियाएं हैं जिनका सम्बंध वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन उपभोग एवं निवेश से है।

**एक अर्थव्यवस्था में आर्थिक क्रियाएं 3 प्रकार की होती हैं-**

1. उत्पादन- उत्पादन एक आर्थिक प्रक्रिया है। जिसमें एक व्यक्ति या फर्म आवश्यक वस्तुओं एवं सेवाओं का बाजार में उत्पादन करती है।

2. उपभोग- उपभोग वह आर्थिक क्रिया है जिसका संबंध वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रयोग से है। जैसे- कपड़ा पहनना, खरीदना, ब्रेड खाना आदि।

3. निवेश- निवेश वह आर्थिक क्रिया है जिसके फलस्वरूप भौतिक एवं मानवीय पूँजी में वृद्धि होती है अर्थात पूँजी का निर्माण होता है।

वह सभी क्रियाएँ जो राष्ट्रीय आय में मूल्यवर्धन करती हैं–आर्थिक क्रियाएँ कहलाती है।

## आर्थिक क्रियाएँ के प्रकार

- आर्थिक क्रियाएँ दो प्रकार की है।
- बाजार क्रियाएँ।
- गैर बाजार क्रियाएँ।



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

- **बाजार क्रियाएँ :-** वेतन या लाभ के उद्देश्य से की गई क्रियाओं के लिए पारिश्रमिक का भुगतान किया जाता है। इनमें सरकारी सेवा सहित वस्तुओं या सेवाओं का उत्पादन शामिल है।
- **गैर बाजार क्रियाएँ :-** स्व उपभोग के लिए उत्पादन है इनमें प्राथमिक उत्पादों का उपभोग तथा अचल संपत्तियों का स्वलेखा उत्पादन आता है।

## महिलाओं की गतिविधियां

महिलाएं आम तौर पर घरेलू मामलों की देखभाल करती हैं जैसे खाना बनाना, कपड़े धोना, बर्तन साफ करना, हाउसकीपिंग और बच्चों की देखभाल करना।

## जनसंख्या की गुणवत्ता

जनसंख्या की गुणवत्ता साक्षरता दर, जीवन प्रत्याशा, व्यक्ति के स्वास्थ्य और देश के समुदायों द्वारा प्राप्त कौशल प्रशिक्षण जैसे कारकों पर निर्भर करती है। विकास दर जनसंख्या उत्पादन से निर्धारित होती है। अस्वस्थ लोगों और निरक्षरता को अक्सर अर्थव्यवस्था के लिए एक दायित्व के रूप में देखा जाता है।

संसाधन एक बहुत महत्त्वपूर्ण घटक है। भारत में विकास की गति की अपेक्षा जनसंख्या वृद्धि दर अधिक है। संसाधनों के साथ क्षेत्रीय असंतुलन भी तेज़ी से बढ़ रहा है। दक्षिण भारत कुल प्रजनन क्षमता दर यानी प्रजनन अवस्था में एक महिला कितने बच्चों को जन्म दे सकती है, में यह दर क़रीब 2.1 है जिसे स्थिरता दर माना जाता है।

जनसंख्या के जीवन की गुणवत्ता का अर्थ व्यक्तियों एवं समाजों के गुणवत्तापूर्ण जीवन यापन से लिया जाता है। किसी देश का विकास मानवीय प्रयासों का फल होता है। गुणवान जनसंख्या एक देश को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर कर सकती है। जनसंख्या की गुणवत्ता व्यापक अर्थों में, यह अन्तर्राष्ट्रीय विकास, स्वास्थ्य एवं राजनीति के क्षेत्रों आदि से सम्बन्धित है। स्वभाविक रूप से लोग जनसंख्या के जीवन की गुणवत्ता को जीवन-स्तर की अवधारणा से जोड़ते हैं जबकि यह दोनों अलग-अलग अवधारणाएं हैं। जहां जीवन-स्तर एक संकुचित अवधारणा है जो प्राथमिक रूप से आय पर आधारित है, वहीं जीवन की गुणवत्ता एक व्यापक अवधारणा है। जीवन की गुणवत्ता के



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

मानक संकेतकों में केवल धन और रोजगार ही नहीं बल्कि निर्मित पर्यावरण, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, सुरक्षा, शिक्षा, मनोरंजन, खुशी, अवकाश का समय और सामाजिक सम्बन्धों के साथ गरीबी रहित जीवन शामिल है। विश्व में लोगों को गुणवत्तापूर्ण जीवन प्रदान करने के लिए विभिन्न देशों की सरकारों के साथ ही गैर सरकारी संस्थाएं एवं वैश्विक संगठन अपना योगदान दे रहे हैं। विश्व बैंक ने भी दुनियां को गरीबीमुक्त करने का लक्ष्य रखा है जिससे लोगों को भोजन, वस्त्र, आवास, स्वतन्त्रता, शिक्षा तक पहुंच, स्वास्थ्य देखभाल और रोजगार की सुविधाएं उपलब्ध हों और उनकी जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो।

जनसंख्या की गुणवत्ता निर्धारित करने वाले कारक-साक्षरता दर तथा व्यक्ति का स्वास्थ्य।

**जनसंख्या की गुणवत्ता के प्रभावकारी कारक-**

**(1) आर्थिक कारक:** जनसंख्या के जीवन की गुणवत्ता के प्रभावकारी आर्थिक कारकों से तात्पर्य ऐसे कारकों से है जो धन से सम्बन्धित हैं। यह निम्नलिखित हैं :

**आय स्तर :** आय स्तर जीवन की गुणवत्ता का एक महत्वपूर्ण कारक है। सामान्यतया उस समाज, वर्ग एवं व्यक्ति की जीवन की गुणवत्ता का ऊँचा माना जाता है जिनका आय स्तर उच्च होता है। निम्न आय की स्थिति में एक व्यक्ति की क्रय करने की क्षमता कम होती है और वह अपने जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ होता है जिससे उसके गुणवत्तापूर्ण जीवन जीने के मार्ग में बाधा उत्पन्न होती है।

**सम्पत्ति का स्तर :** आय स्तर के साथ ही सम्पत्ति का स्तर भी जीवन की गुणवत्ता का एक अन्य महत्वपूर्ण कारक है। सम्पत्ति का स्तर अधिक होने की स्थिति में व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता का ऊँचा होना सम्भव है क्योंकि इसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन को सुखमय बनाने हेतु अधिक सुविधाओं का उपभोग कर पाने में सक्षम होता है।

**रोजगार का स्तर :** एक व्यक्ति के जीवन में रोजगार का महत्वपूर्ण स्थान होता है। रोजगार के माध्यम से व्यक्ति अपने एवं अपने परिवार के जीवन निर्वाह हेतु साधन प्राप्त करने में सफल हो सकता है और अपने जीवन में गुणात्मक सुधार कर सकता है। रोजगार की उपलब्धता न होने की



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

स्थिति में व्यक्ति अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए पर्याप्त साधनों की प्राप्ति हेतु संघर्षरत रहता है।

**गरीबी का स्तर :** जिस समाज में गरीबी का स्तर अधिक होता है वहां लोगों के जीवन की गुणवत्ता निम्न स्तर की होती है। गरीबी की स्थिति में लोग अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं – भोजन, वस्त्र एवं आवास – तक को पूरा करने में असमर्थ रहते हैं। ऐसी स्थिति में गुणवत्तापूर्ण जीवन हेतु आवश्यक सुविधाओं को प्राप्त कर पाना सम्भव नहीं होता है।

**(2) सामाजिक कारक:** जीवन की गुणवत्ता के प्रभावकारी विभिन्न सामाजिक कारक निम्नलिखित हैं :

**जीवन प्रत्याशा :** जीवन प्रत्याशा से आशय लागों के जीवित रहने की औसत आयु से है। यह एक देश के नागरिकों के स्वास्थ्य तथा सभ्यता एवं आर्थिक विकास का सूचक है। जब देश में एक शिशु जन्म लेता है तो उसके कितने वर्ष तक जीवित रहने की आशा की जाती है, इस जीवित रहने की आशा को ही जीवन–प्रत्याशा अथवा प्रत्याशित आयु अथवा औसत आयु कहा जाता है। जीवन प्रत्याशा जीवन की गुणवत्ता का एक प्रमुख कारक है। जिस देश अथवा समाज में जीवन प्रत्याशा अधिक होती है वहां लोगों की जीवन की गुणवत्ता ऊँची होती है।

**शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य :** गुणवत्तापूर्ण जीवन के लिए देश के लोगों का शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है। स्वस्थ जनशक्ति एक देश के लिए एक बहुत बड़ा धन होती है जिसके द्वारा अधिक मात्रा में प्रतिव्यक्ति उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। निम्न स्तर का स्वास्थ्य और पोषण जनशक्ति की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। जनसंख्या की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए आवश्यक है कि लोगों को पर्याप्त तथा पौष्टिक भोजन दिया जाये। इन मदों पर किये जाने वाले व्यय को मानवीय विनियोग की तरह माना जाये क्योंकि यह विनियोग लोगों की कुशलता तथा उत्पादकता में वृद्धि करने की प्रवृत्ति रखता है।

**शिक्षा एवं प्रशिक्षण :** देश में ऊँची साक्षरता दर एवं प्रशिक्षण की स्थिति लोगों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक है। वास्तव में, शिक्षा को विकास की सीढ़ी, परिवर्तन का माध्यम एवं आशा का अग्रदूत माना जाता है। गरीबी एवं असमानताओं को कम करने एवं आर्थिक विकास का आधार तैयार करने में शिक्षा को सबसे शक्तिशाली उपकरणों में से एक माना जाता है। संयुक्त



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

राष्ट्र संघ ने भी माना है कि सबसे अधिक प्रगति उन देशों में होगी जहां शिक्षा विस्तृत होती है और जहां वह लोगों में प्रयोगात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती है। विकसित देशों के विकास के सन्दर्भ में किये गये अध्ययन इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं कि इन देशों के विकास का एक बड़ा भाग शिक्षा के विकास, अनुसंधान तथा प्रशिक्षण का ही परिणाम है। अर्थव्यवस्था के विकास की दष्टि से शिक्षा पर किया गया व्यय वास्तव में एक विनियोग है क्योंकि वह उत्पत्ति के साधन के रूप में लोगों की कुशलता को बढ़ाती है। स्पष्ट है कि देश में उच्च साक्षरता एवं प्रशिक्षण की स्थिति लोगों की गुणवत्ता को बढ़ाती है।

(3) मनोवैज्ञानिक कारक

(4) अन्य कारक

## शिक्षा का महत्व

श्रम की गुणवत्ता बढ़ाती है, परिणाम स्वरूप उत्पादकता में हुई वृद्धि देश की संवृद्धि में योगदान देती है।

## सर्वशिक्षा अभियान

प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

## साक्षरता



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

साक्षरता प्रत्येक नागरिक का न केवल अधिकार है बल्कि या नागरिकों द्वारा अपने कर्तव्यों व अधिकारों का पालन करने व लाभ उठाने का माध्यम भी हैं।

## भारत में साक्षरता दर

जनगणना 2011 के अनुसार भारत की कुल साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत हो गई है जिसमें पुरुषों की साक्षरता दर 82.14 प्रतिशत तथा महिलाओं की साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत हो गई है।

## मृत्यु दर

मृत्यु दर से अभिप्राय एक विशेष अवधि में प्रति एक हजार व्यक्तियों के पीछे मरने वाले लोगों की संख्या से है।

## जन्मदर

एक विशेष अवधि में प्रति एक हजार व्यक्तियों के पीछे जन्म लेने वाले शिशुओं की संख्या से है।

## शिशु मृत्यु दर

शिशु मृत्यु दर से अभिप्राय एक वर्ष से कम आयु के शिशुओं की मृत्यु से है।

## बेरोजगारी

वह दशा या वह स्थिति है जब प्रचलित मजदूरी दर पर काम करने के लिए इच्छुक लोग रोजगार प्राप्त नहीं करते। बेरोज़गारी (Unemployment) या बेकारी किसी काम करने के लिए योग्य व उपलब्ध व्यक्ति की वह अवस्था होती है जिसमें उसकी न तो किसी कम्पनी या संस्थान के साथ और न ही अपने ही किसी व्यवसाय में नियुक्ति होती है।

Fukey Future's Key
Fukey Education



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

## बेरोज़गारी के प्रकार

- **मौसमी बेरोजगारी :-** जब लोग वर्ष के कुछ महीने में रोजगार प्राप्त नहीं करते है।
- **प्रछन्न बेरोज़गारी :-** चार व्यक्तियों का काम आठ व्यक्ति कर रहे हैं।
- **शहरी बेरोज़गारी :-** डिग्री धारी युवक रोजगार पाने में असमर्थ हैं।

## भारत में बेरोज़गारी के कारण

- **बढ़ती जनसंख्या:** वर्तमान में बेरोजगारी का प्रमुख कारण जनसंख्या वृद्धि है जिसे जनसंख्या विस्फोट के नाम से भी जाना जाता है। भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण बेरोजगारी को बहुत बढ़ावा मिला है वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश के लगभग 11% जनसंख्या बेरोजगार है जिन्हे रोजगार की आवश्यकता है। अतः यह कहा जा सकता है की जनसंख्या की अत्यधिक वृद्धि रोजगार के अवसरों की वृद्धि से कम है जिसके कारण बेरोजगारी उत्पन्न हो रही है।
- **कृषि क्षेत्र में विकास की धीमी गति:** भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसकी संपूर्ण जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। वर्तमान में जनसंख्या विस्फोट के कारण कृषि क्षेत्र काफी पिछड़ गया है क्योंकि कृषि के कार्यों की प्रकृति पछड़ी हुई है। कृषि की विधियों में तकनीकों के अभाव, संस्थागत सुधार जैसे – भूमि सुधार, चकबन्दी, भूमिधारिता की सीमा आदि के कारण बेरोजगारी बढ़ी है। इसके अलावा काश्तकारी सुधार, राजनीतिक एवं प्रशासनिक



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

अदक्षता एवं किसानों के व्यवहार में असहयोग की भावना का होना भी बेरोजगारी का प्रमुख कारण है। कृषि के अच्छे अवसर प्राप्त न होने के कारण ग्रामीण इलाकों की बहुत सारी जनसंख्या का नगरों की ओर पलायन करने से नगरों में बेरोजगारी की समस्या को देखा गया है।

- औद्योगिक और सेवा क्षेत्रक सीमित है।
- **शिक्षा पद्धति व्यवहारिक नहीं है:** बेरोजगारी का सबसे प्रमुख कारण है, दूषित शिक्षा प्रणाली। हमारे देश में गुणवत्ता युक्त शिक्षा नहीं दिया जाता, यहाँ केवल साक्षारत दर में वृद्धि हो रहा है। शिक्षा के नाम पर छात्रों को रट के परीक्षा पास कैसे करना है? ये सिखाया जाता है क्लास होते हीं दिमाग से रटंत ज्ञान भी निकल जाती हैं ऐसी शिक्षा प्रणाली एक बेहतर शिक्षित जनसंख्या का निर्माण नहीं कर सकता।
  गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के अभाव में विद्यार्थियों में व्यावसायिक कौशल विकसित नहीं हो पाता, जिसके कारण उन्हें रोजगार नहीं मिल पाता क्योंकि वर्त्तमान समय में लगभग सभी कम्पनियाँ स्किल के अनुसार रोजगार देती है, और युवाओं में स्किल्स का अभाव होता है.
- तकनीकी विकास अव्यवस्थित हैं:
- **ग्रामीण लोगों का शहरों की ओर प्रस्थान:** शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी बढ़ने का एक कारण ये भी है कि ग्रामीण जनसंख्या बहुत बड़ी मात्रा में शहरों की ओर पलायन करता है। इससे शहरों पर बहुत ज्यादा दवाब बढ़ गया है वो इतनी बड़ी अकुशल एवं अशिक्षित जनसंख्या को झेल सकने में असमर्थ हो रहा है।

Fukey Education

## बेरोज़गारी से अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

बेरोज़गारी में वृद्धि मंदीग्रस्त अर्थयवस्था का सूचक है। बेराजगारी में वृद्धि के कारण समाज के जीवन की गुणवत्ता का भी बुरा प्रभाव पड़ता है।

## शिक्षित बेरोज़गारी भारत के लिये किस प्रकार एक चुनौती

प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्र में विकास की गुजांइश है अधिकाशतः शिक्षित लोग तृतीयक सेवाओं की ओर आकर्षित होते हैं जहाँ नौकरियाँ सीमित हैं अतः शिक्षित युवक डिग्रियाँ होते हुए भी बेरोज़गार

हैं। विदेशों में नौकरी पाने वाले इच्छुक युवकों के पास इतनी सुवधाएँ नहीं है कि वह विदेश जा सकें। अतः यह समस्या भारत के लिये जटिल होती जा रही है।

## शिक्षित बेरोज़गारी से समाधान

- स्कूल और कालेजो में व्यवसायिक विषयों को पढ़ाने लिखने की व्यवस्था शुरू की जा सकती है ताकि वह अपना काई काम शुरू कर सकें।
- औद्योगिक प्राशिक्षक केन्द्र (आई.आई.टी) खोले जाएँ ताकि पढ़े लिखे विद्यार्थियों को वहाँ किसी व्यवासाय संबंधी ट्रेनिंग दी जा सके। फिर वह चाहें नौकरी प्राप्त करे या न करें अपना काम खोल सकते हैं।

## राष्ट्रीय नीति का लक्ष्य

जनसंख्या के अल्प सुविधा प्राप्त वर्गों पर विशेष ध्यान देते हुए स्वास्थ्य सेवाओं, परिवार कल्याण और पौष्टिक सेवा तक इनकी पहुँच को बेहतर बनाना है।

नीति आयोग स्वयं को एक अत्याधुनिक संसाधन केंद्र के रूप में विकसित कर रहा है, जिसमें आवश्यक संसाधन, ज्ञान और कौशल हैं, जो इसे गति के साथ कार्य करने, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने, सरकार के लिए कार्यनीतिक नीति दृष्टि प्रदान करने और आकस्मिक मुद्दों का समाधान करने में सक्षम करेगा।

नीति आयोग की संपूर्ण गतिविधियों को चार मुख्य प्रमुखों में विभाजित किया जा सकता है:

- नीति निर्माण और कार्यक्रम की रूपरेखा
- सहकारी संघवाद को बढ़ावा देना
- अनुवीक्षण और मूल्यांकन
- थिंक टैंक और ज्ञान एवं नवोन्मेष हब

नीति आयोग के विभिन्न वर्टिकल इसके अधिदेश को पूरा करने के लिए नीति आयोग के लिए आवश्यक समन्वय और सहायक ढांचा प्रदान करते हैं। वर्टिकल की सूची नीचे दी गई है:

- कृषि



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

- स्वास्थ्य
- महिला एवं बाल विकास
- शासन और अनुसंधान
- मानव संसाधन विकास
- कौशल विकास और रोजगार
- ग्रामीण विकास
- सतत विकास लक्ष्य
- ऊर्जा
- शहरीकरण प्रबंधन
- उद्योग
- अवसंरचना
- वित्तीय संसाधन
- प्राकृतिक संसाधन और पर्यावरण
- विज्ञान और तकनीक
- राज्य समन्वय और विकेंद्रीकृत योजना (एससी और डीपी)
- सामाजिक न्याय और अधिकारिता
- भूमि और जल संसाधन
- डेटा प्रबंधन और विश्लेषण
- सार्वजनिक-निजी भागीदारी
- परियोजना मूल्यांकन और प्रबंधन प्रभाग (पीएएमडी)
- विकास अनुवीक्षण और मूल्यांकन कार्यालय
- राष्ट्रीय श्रम अर्थशास्त्र अनुसंधान और विकास संस्थान (एनआईएलईआरडी)

Fukey Education



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

## NCERT SOLUTIONS

### प्रश्न (पृष्ठ संख्या 27)

प्रश्न 1 'संसाधन के रूप में लोग' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर – संसाधन के रूप में लोग किसी देश के कार्यरत लोगों को उनके वर्तमान उत्पादन कौशल एवं योग्यताओं का वर्णन करने का एक तरीका है। यह लोगों की सकल घरेलू उत्पाद के सृजन में योगदान करने की योग्यता पर बल देता है। अन्य संसाधनों की भांति जनसंख्या भी एक संसाधन है जिसे 'मानव संसाधन' कहा जाता है।

प्रश्न 2 मानव संसाधन भूमि और भौतिक पूँजी जैसे अन्य संसाधनों से कैसे भिन्न है?

उत्तर – मानवीय संसाधन अन्य संसाधनों से इस प्रकार भिन्न है।

1. मानवीय संसाधन उत्पादन का एक अत्याज्य (Indispensable) साधन है।
2. मानवीय संसाधन श्रम, प्रबंध एवं उद्यमी के रूप में कार्य करता है।
3. मानवीय संसाधन उत्पादन को एक जीवित, क्रियाशील एवं भावुक साधन है।
4. मानवीय संसाधन कार्य कराता है और अन्य साधनों को कार्यशील करता

प्रश्न 3 मानव पूँजी निर्माण में शिक्षा की क्या भूमिका है?

उत्तर – मानव पूँजी निर्माण अथवा मानव संसाधन विकास में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा एवं कौशल किसी व्यक्ति की आय को निर्धारित करने वाले मुख्य कारक हैं। किसी बच्चे की शिक्षा और प्रशिक्षण पर किए गए निवेश के बदले में वह भविष्य में अपेक्षाकृत अधिक आय एवं समाज में बेहतर योगदान के रूप में उच्च प्रतिफल दे सकता है। शिक्षित लोग अपने बच्चों की शिक्षा पर अधिक निवेश करते पाए जाते हैं। इसका कारण यह है कि उन्होंने स्वयं के लिए शिक्षा का महत्त्व जान लिया है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह शिक्षा ही है जो एक व्यक्ति को उसके सामने उपलब्ध आर्थिक अवसरों का बेहतर उपयोग करने में सहायता करती है। शिक्षा



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

श्रम की गुणवत्ता में वृद्धि करती है। और कुल उत्पादकता में वृद्धि करने में सहायता करती है। कुल उत्पादकता देश के विकास में योगदान देती है।

प्रश्न 4 मानव पूँजी निर्माण में स्वास्थ्य की क्या भूमिका है?

उत्तर – मानव पूँजी निर्माण में स्वास्थ्य की क्या भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

1. स्वास्थ्य में व्यक्ति का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य शामिल है।
2. आमतौर पर देखा जाता है कि एक स्वस्थ कर्मचारी अधिक कार्य कर सकता है क्योंकि उसका स्वास्थ्य उसे इसके लिए सक्षम बनता है।
3. स्वास्थ्य किसी व्यक्ति को रोगों से लड़ने कि क्षमता प्रदान करता है। स्वस्थ व्यक्ति जीवन कि समस्याओ से आसानी से लड़ सकता है।
4. स्वस्थ व्यक्ति में काम करने कि अधिक ऊर्जा, समर्थ्य और शक्ति होती है।
5. मानव का विकास शिक्षा और स्वास्थ्य से विकसित होता है जिससे मानव पूँजी का निर्माण किया जाता है।

प्रश्न 5 किसी व्यक्ति के कामयाब जीवन में स्वास्थ्य की क्या भूमिका है?

उत्तर – हम सभी जानते हैं कि एक स्वस्थ शरीर में ही एक स्वस्थ दिमाग निवास करता है। स्वास्थ्य जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। स्वास्थ्य का अर्थ जीवित रहना मात्र ही नहीं है। स्वास्थ्य में शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं सामाजिक सुदृढता शामिल हैं। स्वास्थ्य में परिवार कल्याण, जनसंख्या नियंत्रण, दवा नियंत्रण, प्रतिरक्षण एवं खाद्य मिलावट निवारण आदि बहुत से क्रियाकलाप शामिल हैं। यदि कोई व्यक्ति अस्वस्थ है तो वह ठीक से काम नहीं कर सकता। चिकित्सा सुविधाओं के अभाव में एक अस्वस्थ मजदूर अपनी उत्पादकता और अपने देश की उत्पादकता को कम करता है। इसलिए किसी व्यक्ति के कामयाब जीवन में स्वास्थ्य महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रश्न 6 प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में किस तरह की विभिन्न आर्थिक क्रियाएँ संचालित की जाती।



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

उत्तर – प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में पृथक्-पृथक संचालित की जाने वाली प्रमुख क्रियाएँ इस प्रकार हैं।

1. **प्राथमिक क्षेत्र-** कृषि, वन एवं मत्स्य पालन, खनन तथा उत्खनन।
2. **द्वितीयक क्षेत्र-** उत्पादन, विद्युत-गैस एवं जल की आपूर्ति, निर्माण, व्यापार, होटल तथा जलपानगृह।
3. **तृतीयक क्षेत्र-** परिवहन, भण्डार, संचार, वित्तीय, बीमा, वास्तविक संपत्ति तथा व्यावसायिक सेवाएँ, सामाजिक एवं व्यक्तिगत् सेवाएँ।

प्रश्न 7 आर्थिक और गैर आर्थिक क्रियाओं में क्या अन्तर है?

उत्तर – **आर्थिक क्रियाएँ-** वह क्रियाएँ जो जीविका कमाने के लिए और आर्थिक उद्देश्य से की जाती हैं, आर्थिक क्रियाएँ कहलाती हैं। यह क्रियाएँ उत्पादन, विनियम एवं वस्तुओं और सेवाओं के वितरण से संबंधित होती हैं। लोगों का व्यवसाय, पेशे और रोज़गार में होना आर्थिक क्रियाएँ हैं। इन क्रियाओं का मूल्यांकन मुद्रा में किया जाता है।

**गैर-आर्थिक क्रियाएँ-** वह क्रियाएँ जो भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए की जाती हैं। और जिनका कोई आर्थिक उद्देश्य नहीं होता, गैर-आर्थिक क्रियाएँ कहलाती हैं। यह क्रियाएँ सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक एवं सार्वजनिक हित से संबंधित हो सकती हैं।

Fukey Education

प्रश्न 8 महिलाएँ क्यों निम्न वेतन वाले कार्यों में नियोजित होती हैं?

उत्तर – महिलाएँ निम्नलिखित कारणों से निम्न वेतन वाले कार्यों में नियोजित होती है।

1. बाजार में किसी व्यक्ति की आय निर्धारण में शिक्षा महत्त्वपूर्ण कारकों में से एक है। भारत में महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा कम शिक्षित होती हैं। उनके पास बहुत कम शिक्षा एवं निम्न कौशल स्तर है। इसलिए उन्हें पुरुषों की तुलना में कम वेतन दिया जाता है।
2. ज्ञान व जानकारी के अभाव में महिलाएँ असंगठित क्षेत्रों में कार्य करती हैं जो उन्हें कम मजदूरी देते हैं। उन्हें अपने कानूनी अधिकारों की जानकारी भी नहीं है।



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

3. महिलाओं को शारीरिक रूप से कमजोर माना जाता है। इसलिए उन्हें प्रायः कम वेतन दिया जाता। है।

प्रश्न 9 बेरोजगारी' शब्द से आप क्या समझते है?

उत्तर – बेरोजगारी उस समय विद्यमान कही जाती है, जब प्रचलित मजदूरी की दर पर काम करने के लिए इच्छुक रोज़गार नहीं पा सकतें दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि बेरोज़गारी उस अवस्था को कहते है जिसमे व्यक्ति रोज़गार तो पाना चाहता है अर्थात् वह काम करना तो चाहता है। परन्तु उसके पास उस अवसर का अभाव है।

प्रश्न 10 प्रच्छन्न और मौसमी बेराजगारी में क्या अंतर है?

उत्तर – **प्रच्छन्न बेरोजगारी-** प्रच्छन्न बेरोजगारी में लोग नियोजित प्रतीत होते हैं जबकि वास्तव में वे उत्पादकता में कोई योगदान नहीं कर रहे होते हैं। ऐसा प्रायः किसी क्रिया से जुड़े परिवारों के सदस्यों के साथ होता है। काम में पाँच लोगों की आवश्यकता है किन्तु उसमें आठ लोग लगे हुए हैं, जहाँ 3 लोग अतिरिक्त हैं। यदि इन 3 लोगों को हटा लिया जाए तो भी उत्पादकता कम नहीं होगी। ये 3 लोग प्रच्छन्न बेरोजगारी में शामिल हैं।

**मौसमी बेरोजगारी-** मौसमी बेरोजगारी तब होती है जब वर्ष के कुछ महीनों के दौरान लोग रोजगार नहीं खोज पाते। भारत में कृषि कोई पूर्णकालिक रोजगार नहीं है। यह मौसमी है। इस प्रकार की बेरोजगारी कृषि में पाई जाती है। कुछ व्यस्त मौसम होते हैं जब बिजाई, कटाई, निराई और गहाई की जाती है। कुछ विशेष महीनों में कृषि पर आश्रित लोगों को अधिक काम नहीं मिल पाता।

प्रश्न 11 शिक्षित बेरोजगारी भारत के लिए एक विशेष समस्या क्यों है?

उत्तर – शिक्षित बेरोजगारी भारत के लिए एक कठिन चुनौती के रूप में उपस्थित हुई है। मैट्रिक, स्नातक, स्नातकोत्तर डिग्रीधारक अनेक युवा रोजगार पाने में असमर्थ हैं। एक अध्ययन में यह बात सामने आई है कि मैट्रिक की अपेक्षा स्नातक एवं स्नातकोत्तर डिग्रीधारकों में बेरोजगारी अधिक तेजी से बढ़ी है। एक विरोधाभासी जनशक्ति-स्थिति सामने आती है क्योंकि कुछ वर्गों में अतिशेष



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

जनशक्ति अन्य क्षेत्रों में जनशक्ति की कमी के साथ-साथ विद्यमान है। एक ओर तकनीकी अर्हता प्राप्त लोगों में बेरोजगारी व्याप्त है जबकि दूसरी ओर आर्थिक संवृद्धि के लिए जरूरी तकनीकी कौशल की कमी है। उपरोक्त के प्रकाश में हम कह सकते हैं कि शिक्षित बेरोजगारी भारत के लिए एक विशेष समस्या है। अधिकांश शिक्षित बेरोज़गारी शिक्षित मानवशक्ति के विनाश को प्रदर्शित करती हैं। बेरोजगारी सदैव बुरी है किन्तु यह हमारी शिक्षित युवाओं की स्थिति में एक अभिशाप है। हम अपने कुशल दिमाग का उपयोग करने योग्य नहीं होते |

प्रश्न 12 आप के विचार से भारत किस क्षेत्रक में रोजगार के सर्वाधिक अवसर सृजित कर सकता है?

उत्तर – हमारी अर्थव्यवस्था में श्रम का सबसे बड़ा अवशोषक कृषि क्षेत्र है। किन्तु हाल ही के वर्षों में प्रच्छन्न बेरोजगारी के कारण इस क्षेत्र में गिरावट आई है। कृषि क्षेत्र में अधिशेष श्रमिक द्वितीयक या तृतीयक क्षेत्रक में जाना चाहते हैं। द्वितीयक क्षेत्रक में श्रम का सबसे बड़ा अवशोषक लघु-स्तर विनिर्माण क्षेत्र है। तृतीयक क्षेत्रक में श्रम का सबसे बड़ा अवशोषक विनिर्माण क्षेत्र है। तृतीयक क्षेत्रक में कई नई सेवाओं का आगमन हुआ है जैसे कि बायोटेक्नॉलोजी और सूचना प्रौद्योगिकी आदि। हाल ही के वर्षों में बी.पी.ओ. अथवा कॉल संटर उद्योग में सर्वाधिक नौकरी के अवसर पैदा हुए हैं। मध्यम रूप से शिक्षित युवा वर्ग के लिए ये वरदान साबित हुए हैं।

प्रश्न 13 क्या आप शिक्षा प्रणाली में शिक्षित बेरोजगारों की समस्या को दूर करने के लिए कुछ उपाय सुझा सकते हैं?

उत्तर – शिक्षा प्रणाली में शिक्षित बेरोजगारों की समस्या को दूर करने के निम्नलिखित उपाय इस प्रकार है-

1. कौशल विकास पर ज़ोर दिया जाना चाहिए। उत्पादन की तकनीक में परिवर्तन होने से वर्तमान में कुशल श्रमिकों की मांग बढ़ती ही जा रही है।
2. तकनीकी शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।
3. व्यावसायिक शिक्षा शुरू की जानी चाहिए। आज मैट्रिक, स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्रीधारी भी रोजगार पाने में असमर्थ है। एक अध्यन से पता चला है कि मैट्रिक कि तुलना में स्नातक



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

और स्नातकोत्तर युवकों में बेरोजगार की समस्या अत्यधिक गंभीर रूप लेती जा रही है। शिक्षित बेरोजगारों की समस्या को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करके काम किया जा सकता है।

4. उपयुक्त ट्रेनिंग और विकसित कौशल के माध्यम से श्रमिकों की उत्पादन क्षमता को बढ़ाया जा सकता है।
5. शिक्षित बेरोज़गार श्रमिकों में वृद्धि करते है। अर्थव्यवस्था के विकास के लिए द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रक में तीव्र विकास होना चाहिए। तीव्र गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था रोजगार के सुनहरे अवसर प्रदान करती है।

प्रश्न 14 क्या आप कुछ ऐसे गाँवों की कल्पना कर सकते हैं जहाँ पहले रोजगार का कोई अवसर नहीं था, लेकिन बाद में बहुतायत में हो गया?

उत्तर – हाँ, मुझे अपने माली द्वारा सुनाई गई कहानी याद आती है। उसने बताया कि कुछ वर्ष पूर्व उसके गाँव में सभी मूलभूत सुविधाओं जैसे कि स्कूल, अस्पताल, सड़कों, बाजार और यहाँ तक कि पानी व बिजली की उचित आपूर्ति का भी अभाव था। गाँव के लोगों ने पंचायत का ध्यान इन सभी समस्याओं की ओर आकृष्ट किया। पंचायत ने एक स्कूल खोला जिसमें कई लोगों को रोजगार मिला। जल्द ही गाँव के बच्चे वहाँ पढने लगे और वहाँ कई प्रकार की तकनीकों का विकास हुआ। अब गाँव वालों के पास बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ एवं पानी एवं बिजली की भी अचित आपूर्ति उपलब्ध थी। सरकार ने भी जीवन स्तर को सुधारने के लिए विशेष प्रयास किए थे। कृषि एवं गैर कृषि क्रियाएँ भी अब आधुनिक तरीकों से की जाती हैं।

प्रश्न 15 किस पूँजी को आप सबसे अच्छा मानते हैं।

भूमि, श्रम, भौतिक पूँजी और मानव पूँजी? क्यों?

उत्तर – जिस तरह जल, भूमि, वन, खनिज आदि हमारे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन है उसी प्रकार मानव संसाधन भी हमारे लिए महत्वपूर्ण है। मानव राष्ट्रीय उत्पादन का उपभोक्ता मात्र नहीं है बल्कि वे राष्ट्रीय संपत्तियों के उत्पादक भी हैं। वास्तव में मानव संसाधनों जैसे-भूमि, जल, वन, खनिज की तुलना में इसलिए श्रेष्ठ है। भूमि, पूँजी, जल एवं अन्य प्राकृतिक संसाधन स्वयं उपयोगी



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

नहीं है, वह मानव ही है जो इसे उपयोग करता है या उपयोग के योग्य बनाता है। यदि हम लोगों में शिक्षा, प्रशिक्षण एवं चिकित्सा सुविधाओं के द्वारा निवेश करें तो जनसंख्या के बड़े भाग को परिसंपत्ति में बदला जा सकता है। हम जापान का उदाहरण सामने रखते हैं। जापान के पास कोई प्राकृतिक संसाधन नहीं थे। इस देश ने अपने लोगों पर निवेश किया विशेषकर शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में। अंततः इन लोगों ने अपने संसाधनों का दक्षतापूर्ण उपयोग करने के बाद नई तकनीक विकसित करते हुए अपने देश को समृद्ध एवं विकसित बना दिया है। इस प्रकार मानव-पूँजी अन्य सभी संसाधनों की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है। मानवीय पूँजी को किसी भी सीमा तक बढ़ाया जा सकता है और इसके प्रतिफल को कई बार गुणा किया जा सकता है। भौतिक पूँजी का निर्माण, प्रबंध एवं नियंत्रण मानवीय पूँजी द्वारा किया जाता है। मानवे पूँजी केवल स्वयं के लिए ही कार्य नहीं करती बल्कि अन्य साधनों को भी क्रियाशील बनाती है। मानवीय पूँजी उत्पादन का एक अत्याज्य साधन है।

Future's Key
Fukey Education



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com